



SMT. SUBHADRA DEVI

Smt. Subhadra Devi is a famous artist of Papier Mache Madhubani Art, a craft where waste paper is used to make utility and decorative items.

2. Born on 29th February, 1936 at Balour Village, in Darbangha, Bihar, Smt. Subhadra learned different types of traditional art and painting from her mother. Her husband's income was not much and hence she started making Madhubani Paintings to support her family. She used to go by foot to Madhubani Handicraft Office, which is 12 kilometers far away from her village, to sell one painting. Not only that, she used to go to the forest and make colors by bringing flowers and leaves from the forest.

3. Smt. Subhadra started making different types of toys of papier mache and started doing Madhubani painting on it. This way, she gave a new look to papier mache art. Before this papier mache art was made in Jammu and Kashmir, but she gave a new form to this art which became famous Madhubani Papier Mache Art and hence she is known as the Mother of the Madhubani Papier Mache Art.

4. Smt. Subhadra used the culture of Mithila in this art and made many things on the base of culture of Mithila. She invented many new designs in this art. She started demonstrating this art in the different parts of India with the help of Handicraft Department of Government of India. Organization like CCRT, Craft Council of India, Madras Craft Foundation, Dastkar, HHEC, Craft Museum, Pragti Maidan helped her very much in the promotion of her art. She has participated in various exhibition and workshop across the India. She went to Spain also for performing her art. She formed a group of women in her village and taught this art to all of them and slowly people in the entire Madhubani district learned this art. This art has become a means of livelihood for thousands of people in today's time. Now a days, her family members are helping her and taking the art forward. Her brief biography is available in the syllabus of NCERT in the class of XI.

5. Smt. Subhadra has got many awards including State Award in the year of 1980 and National Award in the year of 1990.



श्रीमती सुभद्रा देवी

श्रीमती सुभद्रा देवी मधुबनी लुग्दी (पेपर मैशी) की सुप्रसिद्ध कलाकार हैं। यह एक ऐसा शिल्प हैं जिसमें बेकार कागज से उपयोगी और सजावटी सामान बनाया जाता है।

2. 29 फरवरी, 1936 को बालौर गांव, दरभंगा, बिहार में जन्मी, श्रीमती सुभद्रा ने अपनी मां से विभिन्न प्रकार की पारंपरिक कला और चित्रकारी सीखी। उनके पति की आय अधिक नहीं थी और इसलिए उन्होंने अपने परिवार की सहायता के लिए मधुबनी चित्रकारी करनी शुरू की। वह अपनी एक पेंटिंग बेचने के लिए पैदल ही अपने गांव से 12 किलोमीटर दूर मधुबनी हैंडीक्राफ्ट ऑफिस जाती थीं। इतना ही नहीं, वह जंगल से फूल और पत्तियां लाकर रंग बनाया करती थीं।

3. श्रीमती सुभद्रा लुग्दी के विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाने लगीं और उस पर मधुबनी चित्रकारी करने लगीं। इस तरह उन्होंने लुग्दी कला को एक नयी बनावट प्रदान की। इससे पहले लुग्दी कला का प्रयोग जम्मू-कश्मीर में किया जाता था, लेकिन उन्होंने इस कला को एक नया रूप दिया जो मधुबनी पेपर मैशी कला के नाम से प्रसिद्ध हुई, इसलिए उन्हें मधुबनी लुग्दी यानी पेपर मैशी कला की जननी के रूप में जाना जाता है।

4. श्रीमती सुभद्रा ने इस कला में मिथिला की संस्कृति का प्रयोग किया और मिथिला की संस्कृति के आधार पर अनेक वस्तुएँ बनाईं। उन्होंने इस कला में कई नए डिजाइन तैयार किए। उन्होंने भारत सरकार के हस्तशिल्प विभाग की मदद से भारत के विभिन्न हिस्सों में इस कला का प्रदर्शन शुरू किया। सीसीआरटी, भारतीय हस्तशिल्प परिषद, मद्रास क्राफ्ट फाउंडेशन, दस्तकार, एचएचईसी, क्राफ्ट म्यूजियम, प्रगति मैदान जैसे संगठनों ने उनकी कला के प्रचार-प्रसार में उनकी बहुत मदद की। उन्होंने पूरे भारत में विभिन्न प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं में भाग लिया। वह अपनी कला के प्रदर्शन के लिए स्पेन भी गईं। उन्होंने अपने गाँव में महिलाओं का एक समूह बनाया और उन सभी को यह कला सिखाई। धीरे-धीरे समूचे मधुबनी के लोगों ने यह कला सीख ली। आज यह कला हजारों लोगों की आजीविका का साधन बन चुकी है। उनके परिवार के सदस्य उनकी मदद कर रहे हैं और इस कला को आगे बढ़ा रहे हैं। उनकी संक्षिप्त जीवनी ग्यारहवीं कक्षा की एनसीईआरटी के पाठ्यक्रम में भी शामिल है।

5. श्रीमती सुभद्रा को 1980 में राज्य पुरस्कार और 1990 में राष्ट्रीय पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।